



श्री हिन हयिंयसु महाप्रभु श्रीदास कुल

ब्रजाधिसाज नन्दनाम्बुदाभ गात्र चन्दना -  
बुलेप मन्थ वाहिनी भवाब्धि बीज दाहिनिम् ।  
जगन्त्रये यथास्विनी लसत्सुधा पयस्विनी,  
भजे कलिन्दनन्दिनी दुरन्त मोह भजिनी ॥१॥

रसेक सौम राधिका पद्मार्ज्य भक्ति-साधिका,  
तदंग राग पिञ्जर प्रभाति पुञ्ज मञ्जुलाम् ।  
स्वनेषिषाति शोभिता कृता जनाधि गजना,  
भजे कलिन्दनन्दिनी दुरन्त मोह भजिनीम् ॥२॥

वज्रेंद्र-सुनू-राधिका इति प्रपुष्प माणयो,  
महा रसाब्धि पुर्योरिवाति त्विन्न वेगलः ।  
बाहः समुच्छलनं प्रवाह-रुषिणीमहं,  
भजे कलिन्दनन्दिनी दुरन्त मोह भजिनीम् ॥३॥

विचित्र रत्न बहु सततद्वयत्रियोज्ज्वला,  
विचित्र हंस सारसाध्यन्त पक्षि संकुलाम् ।  
विचित्रमीनमेखला कृतातिदीनपान्थिता,  
भजे कलिन्दनन्दिनी दुरन्त मोह भजिनीम् ॥४॥

वर्तिकां त्रिधाहरमुदा कृपा स्वरूपिणी,  
विशुद्ध भक्ति मुञ्जवलां परे रसात्मिकां विदुः ।  
सुधाश्रुतित्व लौकिकीं परेजवर्णं रुचिणी,  
भजे कलिन्दनन्दिनीं दुरन्त मोह भजिनीम् ॥5॥

सुरेन्द्रवृन्द वन्दितां रसादधिष्ठिते बने,  
सदोपलब्ध माधवाद्भुतेक सदशौचदाम् ।  
अतीव विह्वलमिव च्छलत्त रंग डोलतां,  
भजे कलिन्दनन्दिनीं दुरन्त मोह भजिनीम् ॥6॥

प्रफुल्ल पंकजागतां लसज्जवोत्पलेक्षणां,  
स्थागनाम् युग्मकल्पनी मुदार हंसिकाम् ॥  
नितम्ब चारु रोधसां हरेऽपिपा रसोज्ज्वलां,  
भजे कलिन्दनन्दिनीं दुरन्त मोह भजिनीम् ॥7॥

समस्त वेद मस्तकेत्यम्प वेगवां सखा,  
ममतामनीन्द नारदादिभ्यै सदैव भाविताम् ।  
अनुत्य पात्रैरर्पितां पुमर्च शारदां,  
भजे कलिन्दनन्दिनीं दुरन्त मोह भजिनीम् ॥8॥

य एतदष्टकं बुधस्त्रिकाल सादतः पठे,  
कलिन्दनन्दिनीं इदा विचिष्य विश्वं वदिताम् ।  
इहैव राधिकापतेः पदाब्ज भक्तिमुत्तमा,  
मवाप्य स ध्रुवं भवेत्परत्र ततः प्रियालुगः ॥9॥